सिख नवयुवक सिखी पहनावा तथा पहचान को क्यों छोड़ रहा है?

*लेखक : हुस्न-उल-चराग**

अनुवादक : मंगत सिंघ 'राही'

जनाब हुस्न-उल-चराग जी द्वारा निष्पक्ष तथा मन को छू जाने वाली भाषा में लिखे कुछ लेख ''सिख फुलवाड़ी'' में पहले भी प्रकाशित किए जा चुके हैं। प्रस्तुत लेख सिखी के न्यारेपन की महत्त्ता के विषय में है। आप ने यह लेख इतनी सूझ-बूझ, बारीकी तथा निष्पक्षता से लिखा है कि मन इनकी दलीलें मानने को विवश हो जाता है। इस विषय पर इतनी गहराई तक जाकर किसी सिख विद्वान का लेख हमारी दृष्टि में नहीं आया।

सिख धर्म में जात-पात को नहीं माना गया तथा नाम के साथ गोत्र आदि लिखने की मनाही है परन्तु इस लेख का विषय ऐसा है कि सिखों के नाम के साथ जाति लिखना आवश्यक हो गया था। आशा है कि पाठक हमारी इस मजबूरी को समझेंगे तथा जात-पात वाले शब्द छापने के लिए हमें क्षमा करेंगे।

-संपादक

इस प्रश्न का उत्तर कोई सूझवान सिख समाज-शास्त्री ही दे सकता है। मैं तो स्वयं एक बाहर का व्यक्ति हूं तथा हो सकता है मेरा उत्तर ठीक न हो परन्तु मेरे छपे लेखों को पढ़कर कई नवयुवकों ने मुझे यह प्रश्न किया है कि मैं अपने लेखों की ज़िम्मेवारी लेते हुए इस प्रश्न का उत्तर उन्हें दूं। एक नवयुवक जो अंग्रेजी बोलने का कोर्स कर रहा है तथा उस से सीनीयर दो सिख नवयुवक जिन्होंने होटल मैनेजमैंट का डिपलोमा भी किया हुआ था, ने विदेश जाने के लिए इन्टरवियू दिया तो उन्हें बताया गया कि यदि तुम कलीन-शेव होते तो तुम्हें सिंघापुर के होटल में नौकरी का परमिट मिल सकता था। मालिक ने कहा कि मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे इस फैशन में होते हुए तुम्हें नहीं ले सकता। तब वे दोनों नवयुवक रह गए परन्तु दो अन्य नवयुवक जो पक्के अकाली सिख परिवारों के थे तथा कलीन शेव थे, उन्हें विदेशी-वीज़ा दे दिया गया। ऐसे कुछ कारण विदेशों में जाने के लिए नहीं, यहां अपने देश में भी टी. वी. गायकी, पंजाबी विरासत तथा सभ्याचार के नाम पर कटी दाढ़ी तथा बिना दस्तार के सिख युवकों का फैशन बन गया है। यदि इस की तह में जाया जाए तो देखने में आता है कि देश में सबसे पहले क्रिकेट खिलाड़ी बिशन सिंघ (बेदी) ने अपने पटके के ऊपर यांकी टोपी रखी तथा उसे देखकर सिख नवयुवकों में पटके के ऊपर यांकी टोपी पहनने का रिवाज सा चल पड़ा। निस्संदेह सः बिशन सिंघ पूरे सिखी केसों सहित खेलते रहे तथा आजकल केवल सुंदर दस्तार ही सजाते हैं परन्तु सिख नवयुवकों में वह ऐसी आदत पड़ी कि वह उसी प्रकार ही चल रही है। मशीनी दाहड़ी कट करके टी.वी. पर गायकी का रिवाज गुरदास मान ने डाला जिस के पश्चात् सारे सिख युवक-गायकों ने गुरदास मान के पद-चिन्हों पर चलते हुए सिखी में इस नई रीति को प्रसिद्धी प्रदान की। यहां यह भी हुआ कि गुरदास मान का नाम गुरदास सिंघ था तथा उसके नए उत्पन्न किए फैशन ने ''सिंघ'' शब्द को छोड़ दिया तथा जट सिख पहचान मोने होने के पश्चात् भी बनी रहे, जटों की अपनी ''मान'' गोत जोड़ ली। इसके पश्चात् जो

Missionaries of Khudai Khidmatgars

14-C, Race Course Road, Amritsar, Mob. : 098151-88810

कलाकार, गायकी या फिल्मों में आया, उसने अपने नाम से ''सिंघ'' अक्षर मिटा कर जात साथ मिला ली और यही सिलसिला जारी है। मान साहिब अपनी जात से ही अपनी हस्ती कायम करके प्रसिद्ध तथा धनी हो गए तथा वह हर बड़ी सिख रैली में गीत गाते हैं पर किसी भी ऐस. जी. पी. सी. या अकाली दल के प्रधान ने उन पर कभी ऊंगली नहीं उठाई कि मान साहिब की अपनी खुल तथा धर्म से आज़ादी के कारण सिख नवयुवकों की मानसिक दशा में कितनी तबदीली आई है (मैं मान साहिब से क्षमा चाहता हूं कि मैंने उनका नाम लेकर बात की है, मैं उनके निजी जीवन (आज़ादी) में हस्तक्षेप नहीं कर रहा परन्तु उन के फैशन के कारण जो प्रभाव सिख समाज के नवयुवकों पर पड़ा, उसके कारणों का उल्लेख कर रहा हूं।) इसके उल्ट पंजाबी गायकी के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। इसके साथ-साथ मलकीअत तथा दलेर महिंदी अपने पूरे नहीं तो कम से कम आधे सिखी स्वरूप में आज तक बने हुए हैं। उनकी पगड़ी के गोटे-किनारी को देखकर कई अन्य कलीन-शेव तथा मशीनी दाहड़ी वालों ने भी पगड़ी बांध कर गाना आरंभ कर दिया है। रबी शेरगिल ने सुंदर गायकी तथा सिखी फैशन का आरंभ किया है। इशमीत सिंघ आदि गायकों ने सिख नवयुवकों में नया मोड़ डाला है।

यह तो हुई घर की बात तथा बाहर विदेशों में सिखी का क्या हाल है? विदेश जाने के चाहवान नवयुवकों का बड़ा भाग जो पढ़ा-लिखा नहीं परन्तु अन्य तरीके अपना कर विदेशों में जाने का प्रयत्न करते हैं, वे 100 प्रतीशत चलने से पहले ही कलीन शेव हो जाते हैं ताकि वह चोर-दरवाज़े से जा सकें। जो लोग उचित ढंग अपना कर जाना चाहते हैं उनके लिए एक और परीक्षा पास करनी होती है जिसे प्रसनैलिटी पुआइंटस कहते हैं। यदि नवयुवक

सिख है या उसने मुस्लमानी दाहड़ी रखी हुई है तो उसे शखसीअत-रोहब के नंबर नहीं दिए जाते परन्तु एक कलीन-शेव सिख युवक को चाहे वह कम योग्यता ही क्यों न रखता हो, उसे यह अंक दिए जाते हैं। इस प्रकार सिख नवयुवक अपने देश में अपने आस-पास, अपनो में घिर कर बह रहा है तथा विदेशों में भी अपनी रोज़ी-रोटी की तलाश में मार खाता तथा वेश बदलता है। तब सिख नवयुवक विशेषकर जट-सिख युवकों का कलीन शेव होने पर उत्तर होता है कि सिखी तो मन में होनी चाहिए तथा वह हम में भरी पड़ी है। हम जट सिख हैं तथा जटों के बराबर अन्य कौन सा सिख है, हमने ही मिसलें चलाईं, लड़ाईयां लड़ी, जानें दीं, पंजाब फतहि किया। क्या हुआ अगर बच्चों ने केस कत्ल करा लिए तो। है तो वह सिख ही न तथा जटों का लड़का। **जब जी करेगा** रख लेगा। इस तर्क से प्रश्न उठता है कि ''क्या सिखी जी करन'' में है? या यह कोई (सिखी) मूल सिद्धान्त के शास्त्र (Scripture) से उपजी रहित की सृजना है। जी करेगा रख लेगा-''सिखी मन में है'' के तर्क देने से सिखी की पहचान तथा पूर्णता कायम नहीं रखी जा सकती। जो तस्वीर हमारे सामने हैं उसके अनुसार देश तथा विदेशों में नान-जट सिख भाईचारे के लोग सिखी में अधिकांश रूप में हैं जैसे रामगढ़ीआ बिरादरी, कंबोज-सिख, अरोड़े तथा खतरी सिख, महिरे तथा रमदासीए सिख, सैणी तथा सिकलीगर सिख आदि। यदि निर्धनता के साथ लड़ते पूर्ण गुरसिख देखने हों तो वह सिकलीगर मुहल्ला नाहन तथा पांवटे में देखें या फिर उन्हें भटकते हुए मध्य प्रदेश में। यह वे लोग हैं जिन्होंने पांवटा तथा अनंदपुर साहिब की लड़ाईयों के लिए सिख फौजों के लिए तीर तथा शस्त्र बनाए। निर्धनता का जीवन जीते हुए भी उन के पुत्र-पुत्रियां पूर्ण गुरसिख तथा गुरूद्वारे बना कर रहते हैं। अकाली तथा ऐस. जी.

पी. सी. इनके विषय में चुप हैं।

संसार के सभी धर्मों में से सिख धर्म का पहरावा, पहचान, स्वरूप तथा रहित सबसे कठोर, कठिन तथा न्यारे हैं। केसों की साफ-सफाई तथा संभाल, दस्तार सजाने के लिए समय तथा सूझ, शेष ककारों की संभाल तथा सुधाई। इसी प्रकार यहूदी लोग ''कूपा'' एक छोटी टिक्की की तरह की कैप (टोपी) जो वे सुईयों या कलिप के साथ सिर की चोटी के ठीक मध्य में सजाते हैं, यहूदीओं की पहचान तथा धर्म चिन्ह का भाग है। यहूदी दाहड़े रखते हैं परन्तु आवश्यक नहीं, लेकिन सुन्नत (Circumcision) ज़रूरी है। ईसाईयों में चिन्ह केवल पादरीओं तथा पुजारीओं तक ही सीमित हैं। साधारण ईसाई धारण करें या न करें, आवश्यक नहीं। परन्तु ईसटरन क्रिसटीनिटी-आरथोडेक्स चर्च के मानने वाले दाहड़ी अवश्य रखते थे, परन्तु रूस के सम्राट पीटर दा ग्रेट ने दाहड़ी साफ करने की रीति चला दी। ईसाईयों में सुन्नत समाप्त हो गया। जब इस्लाम नाज़ल हुआ तब मुस्लमानों में सुन्नत जो एक दर्दनाक, कष्टदायक है तथा इस में बच्चे के लिंग से बढ़े हुए मास को काट दिया जाता है, को आवश्यक बना दिया गया। परन्तु सुन्नत एक बार ही होती है। दाहड़ी जो मुस्लमानों में अल्लाह का नूर कहा गया है, आवश्यक है परन्तु आजकल मनमर्ज़ी बन गई है। नमाज़ के समय, नात या कुरान पढ़ते समय सिर टोपी या पगड़ी से ढका होना ज़रूरी है। भारत में हिन्दू धर्म के अनेक फिरकों के लिबास तथा तिलक लगाने के ढंग तरीके उन फिरकों की पहचान बताते हैं। विशेष अवसर, विशेष समय, विधियां तथा रीति मंदिर या हवन के समय अपनाई जाती हैं परन्तु आम जीवन में ज़रूरी नहीं। बुद्ध धर्म में बोधि भिखशू विशेष लिबास तथा शरीर को विशेष अवस्था में रखते हैं तथा जैन साधू तथा साध्वीयां खास लिबास, खास खुराक,

ब्रह्मचर्य जीवन तथा जहां भी जाना हो पैदल जाते हैं। ये नियम केवल उन के लिए ही हैं तथा यह अत्यंत कठिन तथा कष्टदायक हैं परन्तु आम जैनी लोगों के लिए यह ज़रूरी नहीं हैं। परन्तु इन सबसे ऊपर सिख धर्म का स्वरूप जिस में पांच ककारों की पालना तथा प्रतिदिन की रहित है। सारे शरीर के रोम तथा विशेषकर केसों की संभाल तथा उन पर सदा जीवन भर पगड़ी तथा उसकी संभाल, बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। स्वरूप तथा रहित निभाने के लिए मनुष्य में बड़ी दृड़ता तथा इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। यह इच्छा शक्ति सिख में अत्यन्त प्रबल रूप में होनी चाहिए। इसमें साम्प्रदायिक भावना न हो कर नियम तथा उद्यम की भावना होनी चाहिए। इसमें विश्वास तथा इष्ट सदा कायम रहना चाहिए। यह तभी हो सकता है यदि आप में भावना पक्की तथा जोश कायम है। इसलिए विशेष तौर पर केसों की संभाल तथा उन पर दस्तार रखनी भावना के रूप में लिया जाए न कि फटीग (Fatigue), वगार, झंझट, मुसीबत, बंधन, मजबूरी या लोक-लाज या दिखावे के रूप में। जो नवयुवक केसों तथा पगड़ी को मुसीबत, बंधन, मजबूरी या लोक-लाज समझने लगे हैं, क्या कभी सिख लीडरों ने सोचा है कि ऐसा क्यों होने जा रहा है? क्या इस आधुनिक युग में अब सिखी स्वरूप की आवश्यकता नहीं रही या यह पुरानी बात थी, अब समय बदल गया है? यदि सभी कौओं के रंग काले हैं, कबूतर एक जैसे हैं, चिड़ियां, तोते, मधुमक्खियों की कोई अलग पहचान नहीं है। सेना-पुलिस या सकाऊटस को अलग वर्दी का स्वरूप देकर तुम्हारे से क्यों न्यारा किया गया? कितना बोझ है मोटे फौजी बूटों, जुराबों, पेटी तथा वर्दी का। प्रतिदिन क्यों पहनी जाए, केवल युद्ध के समय पहना देंगे? इस सभी बातों को आंखों से देखने से अधिक तुम्हारे शेर दिलों से उठे उदगारों की भावनाओं से भरे विश्वास वाले तुम्हारे

जीवन को आवश्यकता है। केस मुसीबत तथा पगड़ी भारी क्यों लगने लगी है? इसे समझने के लिए जीवन तथा परिस्थितियों का अगला द्वार खोलना पड़ेगा।

जो लोग सच्चाई को सुनने तथा कड़वाहट को चखने से घबराते हैं, वे समस्या को नहीं सुलझा सकते। खेतों में आम उगती फसलों की तरह सिखी उगाई नहीं जा सकती। सिखी की उपज तथा सृजना उतनी ही कठिन है जितना पहले बताए हुए की तरह सिखी स्वरूप को संभालना। जो जन्म ले रहा है वह कुछ भी हो सकता है। उसके जन्म को सजाने वाले तुम हो। उसकी बुद्धि की बनावट, जज्बों को उभारने की, उसके भीतर उछाल तथा लहरें उत्पन्न करनी तथा उसके समक्ष सिखी स्वरूप का तसवीर-ए-पैगाम तुम स्वयं हो। सामने वाले की झलक ने ही उस के मन के भीतर तक जाना है तथा घर कायम करना है। सो बताओ तुम कैसे हो? तुम क्या हो? अपने नव-जन्मे बच्चे के समक्ष जाने से पहले स्वयं शीशे के आगे जाओ। उसे वही कुछ बन जाना है जो तुम हो। यदि तुम सिखी-सरदारी का स्वयं नमूना हो तो तुम्हें कोई भय नहीं होना चाहिए। यदि नहीं तो तब फिर तुम गिरे के गिरे। प्रचार के लिए दीवान, कीर्तन दरबार या तो राजनीति से प्रेरित हैं या कोई व्यापारी या कलाकार अपने कारोबार की प्रसिद्धी के लिए बड़ी-बड़ी फीसें लेने वाले प्रसिद्ध कीर्तनिए प्रभाव डालने के लिए मंगवा कर कुछ समय के लिए सिखों को मंत्र-मुग्ध तो कर लेते हैं परन्तु वे सिख नवयुवकों में सिखी का जज़्बा उतारने में सफल नहीं हो पाते।

देश में इस्लामी राज्य स्थापित हो जाने के पश्चात् कोई हिन्दू घोड़े या हाथी की सवारी, शस्त्र धारण करने या पगड़ी का लड़ ऊँचा नहीं कर सकता था। उन्हें आधे नाम के साथ बुलाया जाता था। सरदार तथा चौधरी कहलाने का अधिकार केवल मुसलमानों

के पास था। ढोल बजाकर, बाजे बजा कर हिन्दू कोई समागम नहीं कर सकते थे तथा न ही हिन्दूओं को नगारा रखने या बजाने की आज्ञा थी परन्तु जैसे ही पहली बैसाख 1699 को तुम्हारी खालसा के रूप में सृजना की गई उस समय से तुम्हें शस्त्र रखने, पगड़ी के लड़ ऊंचे छोड़ने, घोड़े की सवारी करने, नगारे रखने तथा बजाने, नरसिंघे की आवाज़ करने का इलाही स्वतन्त्र अधिकार देकर (सिख) खालसा बना दिया गया। अब सिखों के पास कृपाण, ढाल, किरच-कटार, बरछा-बल्लम तथा तीर-कमान जैसे शस्त्र तथा सवारी के लिए घोड़े थे। अधिकार के रूप में सिखों को ''सरदार'' के खिताब से संवारा तथा निवाजा जाने लगा। सिख लोग विशेष हो गए। अब सिख व्यक्ति में हिम्मत आ गई थी जो उसके शेष के समाज के गैर-मुस्लिम भाईयों में नहीं थी। अब सिख दूसरों को सहायता, रक्षा तथा संभालने वाला था। जो दे सकता है, लोग उसी के पास आते हैं तथा पंजाब के समाज ने सिखों के पास आना तथा उनसे सहायता मांगना शुरू कर दिया। इतनी बड़ी घटनाएं जिन्होंने पंजाब (पिशावर से दिल्ली तथा सिंध मुल्तान से कशमीर-लदाख तक) के इस सारे भाग को हिला कर रख दिया तथा सिख देने वाले (दाते) बन गए। इस बात को किसी सिख ने आधुनिक काल में अपनी कौम के शरीर में नहीं डाला। आज के नवयुवक सिख बच्चों को सिखी की गुड़ती ही नहीं दी जा रही तथा न ही उन्हें इस सामाजिक उल्ट फेर से ही ज्ञात कराया जा रहा है। सिखो! याद करो जब तुम हिन्दू थे, तुम्हें शस्त्र-सवारी करना मना था। तुम अपनी पगड़ी का तुर्रा ऊँचा नहीं रख सकते थे तथा जैसे ही तुम सिख तथा सिंघ सजे, जैसे ही तुम्हारे नीचे सवारी, हाथों में शस्त्र तथा तुम्हारा दमदमाता चेहरा सूरज की तरह चमकता था। समाज तुमसे रक्षा की आशा तथा मांग करता था। तुम निमानों के मान

बने। तुम ने परिवर्तन लाया, फौजों के मुंह मोड़ दिए तथा राज्य कायम किए तथा जब तुम खालसाई शक्ति को भूल गए तो राज्य गंवा बैठे। अब आधुनिक युग में तुम्हारा सब कुछ टूट रहा है तथा खालसाई बल तो क्या तुम खालसाई निशानियां भी गंवा रहे हो। परन्तु इसमें तुम्हारा भी क्या दोष? झोना (चावल) बीज कर उसे पानी ही न दिया तो उसने सूखना ही है। तुम्हें तो जन्म देकर स्वतन्त्र छोड़ दिया गया। तुम्हारी सृजना नहीं हो पाई। हां! तुमने सिखों के घर में जन्म अवश्य लिया है। भारती समाज जो स्वर्ण तथा शूद्रों में बंटा तथा नकारा पड़ा था। वही शूद्रों के घर रंघरेटे तथा मज़हबी जब सिख तथा खालसा हुए तब उन्हें भी अब ''सरदार जी'' करके संबोधन किया जाने लगा तथा अब वे शूद्र नहीं थे। परन्तु आज के समय तुम अपना नाम शेर सिंघ, बघेल सिंघ या बाज सिंघ जो मर्जी है रख लो तथा साथ गिल, रंधावा, संधु, बराड़ कुछ भी जोड़ लो पर यदि तुमने दाहड़ी खो दी है तथा पगड़ी त्याग दी है तो तुम बाबू या बाबू जी तो हो सकते हो परन्तु ''सरदार जी'' कह कर तुम्हें कोई नहीं बुलाएगा। एक करोड़पति लाला है, उसे कोई सरदार नहीं कहता। हां, उसे कई अमीर सेठ कह देंगे परन्तु सेठ के पास केवल धन है वह भय में सदा भयभीत रहता है तथा रक्षा के लिए दूसरों पर निर्भर। वह धनवान मालिक हो कर भी सहायता किसी अन्य से मांगता है। परन्तु मान लो तुम्हारे पास भूमि भी नहीं रही, तुम जात के जट, कंबोज, रामगढ़ीए चाहे किसी भी भाईचारे से हो परन्तु यदि तुम साफ सुथरे सिखी स्वरूप में हो तो प्रत्येक स्थान पर सरकारे-दर्बारे, रेल में, बस में, जनता में रहते, भारत, पाकिस्तान या बंगलादेश में तुम्हें ''सरदार जी'' कह कर बुलाया जाएगा। संसार में संचार तथा आवाजायी के साधनों की गति तीव्र हो जाने से सारी दुनियां को पता चल गया है कि

भारत में पंजाब है तथा उस पंजाब में सरदार लोग (सिख) बसते हैं तथा वे तुम्हारे न्यारे स्वरूप के विषय में बाते करते हैं। सिख दोस्तो! तुमने सब्ज़ी बनाई परन्तु नमक डालना भूल गए। तुमने घी डालकर आटा भूना, पानी डाला कि कड़ाह प्रशाद तैयार हो परन्तु चीनी डालना भूल गए। सब्ज़ी देखने में ठीक लग रही है परन्तु खाने में बिना स्वाद के, क्योंकि उसमें नमक नहीं है। प्रशाद देखने में अत्यन्त सुंदर है, घी ऊपर तैरता दिख रहा है परन्तु स्वाद में लेवी की तरह फीका क्योंकि उसमें शक्कर नहीं मिलाई गई तथा बिना मीठे वह कड़ाह प्रशाद नहीं। दोस्तो! तुम्हारे पास सुंदर सुडौल शरीर है, ऊंचे लम्बे हो, तुम्हारी पंजाबी में बोलचाल अत्यन्त मधुर है। शायद तुम्हें गुरबाणी भी कंठ हो जैसे हर व्यक्ति गुनगुनाते हुए लोक-गीत याद कर लेता है। तुम्हारे पास सब कुछ होने के बावजूद तुम्हारे में सिखी की एक आवश्यक वस्तु नहीं है। शायद तुम्हें उसकी गुड़ती ही न दी गई हो। तुम्हारे भीतर वह ज़ज़्बा ही न उत्पन्न किया गया हो या दिमाग में सिखी तथा खालसाई विचारधारा ही न उत्पन्न की गई हो। यदि तुम्हारे मां-बाप या सिखी के लीडरों ने तुम्हें यह सब कुछ दिया ही न हो तो इस में नवयुवकों का क्या दोष? तुम तो फिर बाइज़्ज़त बरी हो तथा इस कमी का दोष तो तुम्हारें लीडरों पर जा पड़ा। खो वह वस्तु जाती है जो हमारे पास हो यदि वह दी ही न गई हो तो वह खो कैसे गई तथा किस ने खोयी। आज ज़मीनों की कीमतें कितनी ऊंची उठ गई हैं। एक दो किले बेच कर तुमने कोठियां भी बना लीं। किला बेचकर बड़ी कार भी ले आए। अब देसी के स्थान पर विलायती (अंग्रेज़ी) शराब पीने लग गए होंगे। तुमने नहीं तो तुम्हारें अनेकों मित्रों ने मशीनी-दाहड़ी कुतर कर कानों में सोने की मुद्रा भी डाल ली होंगी तथा टेलीफोन, सैलफोन तथा बड़ा टी. वी. भी घर में

आ गया होगा। अब तुम तथा तुम्हारे मां-बाप ठंडी कार तथा ठंडे घर में या तो अधिक सोते होंगे या फिर लोक-गीतों-रैलीओं तथा पार्टी-पालीटिक्स में हर मास एक के बाद एक तरह-तरह के चुनावों में उलझ गए होंगे। परन्तु जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ था तुम्हारे लीडर किस दिशा में कहां थे? दुख की बात है कि वे तुम्हारे जीवन में कड़ाह प्रशाद में चीनी डालना तथा दाल-सब्ज़ी में नमक डालना भूल गए। केवल एक वस्तु की कमी ने दाल-सब्ज़ी या प्रशाद को कैसे स्वादहीन तथा व्यर्थ कर दिया। तुम्हारी विशालकाय शरीर के होते हुए भी तुम्हारे भीतर सरदारी के ओहदे की शान न आई, न कायम हुई।

सिखी पृथ्वी से अलोप नहीं हो रही, बल्कि सिखों में से सिखी खोई जा रही है, गुम हो रही है। वह क्षीण होती जा रही है। मेरे पिछले लेख जो तुमने ध्यान से पढ़े हैं तब तुम्हें याद होगा-मैंने लिखा था कि तुम केवल एक सिख ही नहीं हो तथा न ही संसार की भीड़ में अकेले खड़े सिखों का प्रतिनिधित्व कर रहे होंगे अपितु संसार की सभी कौमों में खड़े तुम अकेले में ही सारी सिख कौम नज़र आ रही होगी। इसलिए तुम्हारा हर कार्य तथा मुख से निकला वाक्य सोचा-समझा हुआ होना चाहिए। यह कैसे हो? इसे प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन अभ्यास, कठिन परिश्रम, संघर्ष तथा आत्मक शक्ति की आवश्यकता है। दूसरा प्रश्न है देश तथा विदेशों में जो हानि सिखी की हो चुकी है उससे सिखी को कैसे बचाया जाए? इस समय सिखी कमज़ोर तथा निर्बल अवस्था में है। शिक्षा तथा विद्या में सिख कौम पछड़ गई है। युवकों के पास स्कूल सरटीफिकेट तथा कालेज की डिग्रीआं हैं परन्तु निम्न स्तर की तथा वास्तविकता से परे। कौमों का माप-दण्ड सरटीफिकेट नहीं होते अपितु प्रत्यक्ष दिखाई देते कार्य होते हैं। **सिख नवयुवक**

बेकार इसलिए नहीं कि रोजगार नहीं है, बल्कि इसलिए है कि जो आधुनिक रोज़गार हैं उनके लिए आम सिख नवयुवकों के पास योग्यता नहीं है। जो कार्य उसे मिलता है उसे शर्म के मारे व छोटा समझ कर उसे करता नहीं तथा जो वह करना चाहता है उसके वह योग्य नहीं। अब समस्या का कारण हमारे समक्ष आ गया है कि सिख नवयुवक आधुनिक कार्यों के योग्य नहीं। तब फिर यह योग्यता कैसे प्राप्त की जाए? नवयुवकों तथा बचपन की पौध को कैसे संभाला जाए तथा आधुनिक रोज़गार की सिखलाई कैसे दी जाए? इस के समाधान के लिए मैं सारी सिख कौम का ध्यान जापानियों की ओर ले जाता हूं जो 1848 तक विश्व के उन्नत देशों से 200 वर्ष पीछे थे। उन्होंने शिक्षा का विकास किया, हस्तशिल्प तथा उद्योगों के कारण जापान विश्व की बड़ी शक्तियों में सम्मिलित हो गया। दूसरी उदाहरण यहूदीओं की है। इस कौम ने संसार में विज्ञान, उद्योग, अर्थ तथा शिक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया हुआ है। इन्होंने विश्व में सबसे अधिक खोजें की तथा नोबेल प्राईज़ जीते। कोई संदेह नहीं कि इतिहास में इस कौम को कई बार सताया गया परन्तु ये उभरते ही चले आए हैं। ये लोग योग्य हैं, धनवान हैं, उद्योगपति हैं, विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में इन्होंने बाज़ी मार रखी है। संसार में बड़े-बड़े उच्च स्तर की पदवियां इनके पास हैं। राजनीति तथा व्यापार में इनकी बराबरी नहीं है। इन्होंने इज़राईल के रेगिस्तान को कैसे पानी से हरा-भरा कर दिया है। उपलब्धियों की कमी होते हुए भी यहां उद्योग तथा उपकरणों की प्रगति हुई है। इसके उल्ट नेपाल को देखिए। वातावरण कितना ठंडा तथा अनुकूल हरा-भरा। गोरखे बहादुर हैं परन्तु चौकीदार या रखवाली के कार्यों के लिए जाने जाते हैं। इसी प्रकार सिख अच्छे योद्धा होने पर भी देश तथा विदेशों में टैक्सी तथा ट्रक ड्राईवर

या बड़े होटलों के दर्बान के रूप में प्रसिद्ध हैं। सिख गंभीरता से विचार करें कि क्या सिखी का बीज तथा खालसा सृजना इन दोनों कार्यों तथा खेती के लिए ही की गई थी? समय कितना बदल गया है परन्तु दूर रहते सिखों की सोच समय के साथ-साथ क्यों नहीं ऊंचा उठी? 60 वर्षों की आज़ादी में भी पंजाब के गांवों की शिक्षा का रूप नहीं बदला। कौम सदा साधु-संतों के डेरों में ही खो जाती रही है। नए युग में भी सिखों को शिक्षा के पक्ष से होश नहीं आई। पिछले कुछ समय से युवकों ने टी. वी., संगीत तथा आधुनिक फैशन अपना कर पगड़ियां उतार फैंकी। अब वे नवयुवक केसों तथा पगड़ी को 'पंगा' कहते हैं। मैट्रिक बापू ने पास करवाई, डिग्री अध्यापकों से करा ली। अब बापू और ज़मीन बेचेगा तथा बेटा चोर-दरवाज़े से विदेश डालर कमाने जाएगा। इसी आशा में अब गांव के नवयुवक शहर में आकर अंग्रेज़ी सीख रहे हैं।

आश्चर्य की बात है कि जो लोग साठ या सत्तर में अमेरिका, कैनेडा या इंग्लैंड गए तथा उनके बेटे-बेटियां भी वहां पर ही जन्में परन्तु प्रौफैशनल उनमें से भी कोई न बन सका। अधिकतर पंजाब से गए लोग टैक्सियां तथा ट्रक चला रहे हैं या बागों या खेतों में सब्जी-फल तोड़ते तथा डिब्बों में बंद करने का कार्य करते हैं। उनकी स्त्रियां भी कारखानों, बेकरी, होटल तथा रेस्टरां में निम्न स्तर के कार्य करती हैं। उन इतने पुराने गए लोगों ने इतने उन्नत देशों में जाकर भी क्या सीखा? इस समस्या पर गंभीरता से सोचना चाहिए कि पंजाब का व्यक्ति क्यों विद्या तथा विज्ञान की ओर नहीं बढ़ रहा? सिवाए डा॰ हरगोबिंद खुराना के कोई भी प्रसिद्धिप्राप्त खोज के कार्यों में दिलचस्पी नहीं दिखा रहा। यदि सिख कौम ने प्रगति करनी है तब सिख बच्चों में प्रोफेशनल विद्या, व्यापार

तथा उद्योगों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने की इच्छा का प्रसार करना होगा। चाहे आप देश में हों या विदेश में, अपने बच्चों की मानसिकता में क्रान्ति लाओ। उन्हें प्रारंभ से ही यह अहसास कराओ कि अब जीवन दिमागी तथा हस्तकला के मुकाबले का है (बच्चों की मानसिकता कैसी हो तथा कैसे इसका आरंभ किया जाए, इसके लिए अलग लेख हैं)। सिखों पर जो ड्राईवरी की मोहर लग चुकी है उसे केवल विद्या तथा विज्ञान की पढ़ाई से ही धोया जा सकता है। इस मोहर के कारण ही तुम्हारी संसार में अलग पहचान होने के साथ ही तुम्हारे अस्तित्व को भी नहीं पहचाना जा रहा। यदि तुम अपनी पहचान के साथ-साथ अपना अस्तित्व भी कायम करना चाहते हो तब तुम्हें यहूदियों की तरह विज्ञान तथा व्यापार, जापानी-कोरियाईयों तथा चीनियों की भान्ति आधुनिकता में कैसे बदलना है तथा हस्तशिल्प उद्योगों को अपना कर उत्पादन बढ़ाना तथा विश्व-बाज़ार पर अधिकार कर लेने जैसे कार्य करने होंगे। पिछले 40 वर्ष में खेती के उत्पादन को छोड़कर कौम शेष कार्यों में नीचे हो गई है तथा इस सारे समय में राजनीतिज्ञ तो एक से एक बढ़कर हुए परन्तु कोई भी दूर-दृष्टि वाला सिख जिसने कौम की विद्या तथा उद्योगीकरण के विषय में सोचा हो, नहीं हुआ। केवल तथा केवल विद्या, विज्ञान, उद्योग तथा व्यापार ही हैं जो कौम को ऊंचा उठा सकते हैं। जिस दिन सिख यहूदियों की तरह अध्यापक होंगे तथा एक-एक बच्चे को घेर कर सिखलाई के लिए तैयार कर लेंगे तभी कौम में परिवर्तन आएगा। तब सिख नवयुवक ट्रक चलाने वाले ड्राईवर नहीं बल्कि ट्रक तथा कारें बना कर बेचने वाले उद्योगपति बन जाएंगे। प्रोफेशनल, उद्योगपति, व्यापारी तथा शो रूमों के मालिक होंगे। तब उन्हें गैसोलीन पंपों पर छोटी मज़दूरियां नहीं करनी पड़ेंगी। तब वे अपने पैसे के मालिक होंगे तथा सिख अपने

देश के बाहर विदेशों में अपने पैसे का निवेश करेंगे। देश तथा विदेश की सरकारें तथा कम्पनियों तथा उद्योगपतियों के बुलावे आएंगे। तुम्हें निमंत्रण पत्र मिलेंगे। तुम खालसे के आरंभ में जैसे लोगों के सहायक थे, अब फिर तुम उन्हें सहायता देने वाले बन सकते हो तथा तब तुम्हारी दाहड़ी चाहे खुली हो या बांधी हुई, उसका कोई व्यक्तित्व टैस्ट या अंक नहीं काटा जाएगा तथा न ही टैस्ट देना पड़ेगा।

ऐसे स्थानों पर वही व्यक्ति या कौमें पहुंच सकती हैं जो खज़ाना (TREASURY) उत्पन्न कर सकें, विद्या तथा विज्ञान का, अकल तथा सूझ-बूझ का, धन तथा वस्तुओं का, हस्तशिल्प, डाक्टरी तथा इंजनियरिंग का, बागों, खेतों तथा जंगलों का। जब यह सब कुछ व्यक्तियों तथा कौमों को प्राप्त हो जाता है जैसे इंग्लैंड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, जापान, कोरिया तथा अब कुछ ही दिनों तथा वर्षों में उन्नति के शिखर पर खड़े चीन ने प्राप्त कर लिया है तथा दूसरे मनुष्य तथा देश जिनके पास नहीं होता वे जिनके पास होता है, उनसे यह आशा करते हैं कि वे उनकी आवश्यकताएं पूरी करें। बड़ा वह होता है जो आवश्यकताएं पूरी करने के योग्य हो। मैंने जो खज़ानों का नुक्ता पेश किया है, सिख तनिक सोचें कि खेती को छोड़कर उनके पास कोई अन्य खज़ाना भी है? क्या तुम्हारे ऊपर कोई निर्भर है? तुम्हारी किसी को आवश्यकता है? उत्तर है : नहीं। अपितु तुम स्वयं दूसरों पर निर्भर हो, रोज़गार के लिए, पैसों के लिए, व्यवसाय के लिए। विश्व के कमज़ोर देश विश्व बैंक, आई. ऐम. ऐफ., अमेरिका, जापान की ओर क्यों जा रहे हैं? क्योंकि वे उनकी अवश्यकताएं पूरी कर सकते हैं-दे सकते हैं। यदि तुम संसार की कौमों के बराबर पहुंचना चाहते हो तब योग्यताओं का, धन का, उद्योगों का तथा प्रोफेशनलज़ का खज़ाना पैदा करो। कौम

को दूसरों की आवश्कता पूरी करने के योग्य बनाओ। ज़मीनें बेच कर, कुरपशन (रिश्वत ले कर) करके कारें खरीदने तथा कोठियां खड़ी करने से तुम किसी को देने के योग्य नहीं हो सकते। मैंने अपने एक मित्र बनिए को बताया कि मेरे साथ का घर बड़ा सस्ता बिक रहा है। उसने मुझे उत्तर दिया दुकान से घर बन जाता है, घर से दुकान नहीं बनती। मैंने दुकान अभी पूरी करनी है। उसने मुझे बता कर सोचने का रास्ता दिखा दिया। अत: मेरे मित्रो! तुम्हें मेरे इस मित्र बनिए की बात कैसी लगी? हां तुम देने के योग्य हो सकोगे जिस दिन तुम अपने लिए घर या कार, ज़मीन बेच कर या रिश्वत ले कर (या कोरपशन करके) नहीं, अपनी दुकान से, अपने व्यवसाय से बनाओगे। उस दिन तुम मेरे से ऊँचे खड़े होंगे, जिस दिन तुम कारें, ट्रैक्टर, टरबाईनें, साज़ो-सामान तथा मशीनरी बना कर स्वयं बेचने के योग्य हो जाओगे। आज जैसे तुम सभी छोटे-बड़े सिख अपनी अलग पहचान तथा पूर्णता को सुरक्षित रखने के लिए अपने ही देश तथा विदेशों में संघर्ष कर रहे हो तथा तुम्हारी न्यारी पहचान की सुनवाई तक नहीं हो रही। अपना दृष्टिकोण बदलें, देने के ख़ज़ाने पैदा करें, दुनियां वाले तुम पर संदेह या व्यक्तित्व टैस्ट तो क्या तुम्हारी पहचान को सलाम करेंगे, मान्यता देंगे, तुम्हारा सम्मान करेंगे तथा तुम्हारी पहचान को अपनाने के लिए तैयार होंगे।

आमीन।



Type Setting : ***Surjit Computers***
Basti Sheikh, Jalandhar.
Ph. : 9876071280, 9463764811